कुदरत से जब भी किया

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

इस दुनिया में देख लो, हैं ऐसे इंसान।
समझ न रखते धर्म की, देते हैं व्याख्यान ।।-1

काट रहे हैं जिंदगी, घर में रहकर मौन।
मात-पिता की बात को, आज पूछता कौन ।।-2

सिर पर जब लेकर चले, अहंकार की छान।
मिल जाता है एक दिन, मिट्टी में इंसान ।।-3

जल से चलती जिन्दगी, जल जीवन आधार।
समझ मनुज उपयोगिता, मत कर जल बेकार ।।-4

मेहनत करते रात दिन, अपने सभी किसान।
तब जाकर होता कहीं, पैदा गेहूँ धान ।।-5

मित्र हुआ जब से शुरू, दूरभाष का दौर।
उलझे अंतर्जाल में, नहीं किसी की गौर ।।-6

सजनी को भारी खुशी, आये घर जब कंत।
मुरझाया सारा बदन, खिलकर हुआ वसंत ।।-7

जिस घर में होता नहीं, महिला का सम्मान।
उस घर से भगवान भी, कर जाते प्रस्थान ।।-8

कुदरत से जब भी किया, मानव ने खिलवाड़।
कुपित हुए भगवान जी, खिसका दिए पहाड़ ।।-9

अपने आगे और को, समझे जो बेकार।
अल्प ज्ञान का हो गया, ज्यादा भूत सवार ।।-10

अगर किसी इंसान का , आता समय खराब।
उसके अपने खास भी , रहते दूर जनाब ।।-11

घर में सभी सदस्य जब, बनते नंबरदार।
चले नहीं संयुक्त तब, अच्छे से परिवार ।।-12

नाम- जयवीर सिंह अत्री
पिता- स्व. श्री कमल सिंह
माता- स्व. श्रीमती कृपावती देवी
जन्म तिथि- 05 अगस्त1961
शिक्षा - स्नातक विज्ञान
व्यवसाय - भारतीय रेल सेवा से निवृत्त
मौलिक कृतियाँ - 05 काव्य रस की धारा , बहुरंगी दोहे और कुंडलियाँ , एक बार दिल से, गीतिका, शब्द बोलते हैं।
साझा - संग्रह-40 के करीब।
सम्मान - साहित्य सागर सम्मान , रेलवे द्वारा प्रशस्ति पत्र व नगद पुरस्कार , सोशल एंड मोटीवेशनल ट्रस्ट ग्रुप , दोहा दर्पण ,दोहा रचनाकार मंच , दोहा धुरंधर, सृजन सरोवर, महाकवि संत तुलसीदास साहित्यिक संस्थान द्वारा प्रशस्ति/सम्मान पत्र प्राप्त।
स्थायी पता -
ग्राम - ख्वाजपुर ,
तहसील-जेवर
जिला - गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र)
वर्तमान पता - सी-33 ,सैक्टर -. 03 ,
चिरंजीव विहार , गाजियाबाद - (उत्तर प्रदेश)
पिन कोड-201002
मोबांक – 9205729788